रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

संस्कृत भाषा के महान कवि थे कविराज राजशेखर
रादुविवि में त्रिदिवसीय अखिल भारतीय राजशेखर समारोह के द्वितीय दिवस शोध संगोष्ठी एवं विशिष्ट व्याख्यान के आयोजन

जबलपुर 30 मार्च। राजशेखर संस्कृत भाषा के कवि थे। काव्यमीमांसा कविराज राजशेखर कृत काव्यशास्त्र संबंधी मानक ग्रंथ है। इसी के साथ कर्पूरमंजरी संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार एवं काव्यमीमांसक राजशेखर द्वारा रचित प्राकृत का नाटक (सट्टक) है। प्राकृत भाषा की विशुद्ध साहित्यिक रचनाओं में इस कृति का विशिष्ट स्थान है। राजशेखर की काव्यमीमांसा रीति–रस–अलंकार आदि किसी एक विषय को लेकर लिखी रचना नहीं है, किंतु अपनी नवीन प्रतिभाजन्य शैली द्वारा काव्य एवं कवि के समग्र प्रयोजनीय विषयों का एक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी संकलन है। उपरोक्त जानकारी संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग रादुविवि के विभागाध्यक्ष प्रो. राधिका प्रसाद मिश्र ने बुधवार को रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय में आयोजित अखिल भारतीय राजशेखर समारोह के द्वितीय दिवस पर आयोजित राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी के दौरान दी।

कालिदास संस्कृत अकादमी मप्र संस्कृति परिषद्, उज्जैन द्वारा संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर के सहयोग में त्रिदिवसीय अखिल भारतीय राजशेखर के द्वितीय दिवस विवि के समिति कक्ष में संस्कृत के विद्वान आचार्य रहस बिहारी द्विवेदी (राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त) की अध्यक्षता एवं तिलक कॉलेज की पूर्व प्राचार्य डॉ. इला घोष के मुख्य आतिथ्य में शोध संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें देष के विभिन्न प्रांतों से आये विद्वतजनों ने "राजशेखर साहित्य में पात्र योजना" विषय पर शोध आलेख प्रस्तुत किये।

कविराज राजशेखर के नाटकों की विस्तृत व्याख्या–

आयोजन के अगले सत्र में " राजशेखर के नाटकों में वैदिक संस्कृति" विषय पर विशिष्ट व्याख्यान में कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष तथा कला संकायध्यक्ष प्रो. राजेश्वर मिश्र ने कविराज राजशेखर के नाटकों की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की। विशिष्ट व्याख्यान सत्र की अध्यक्षता तिलक कॉलेज की पूर्व प्राचार्य डॉ. इला घोष ने की। इस दौरान कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन के निदेषक डॉ. संतोष पण्डया, कार्यक्रम समन्वयक एवं संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग रादुविवि के विभागाध्यक्ष प्रो. राधिका प्रसाद मिश्र मंचासीन रहे। विषय प्रवर्तन करते हुए कार्यक्रम संयोजक तथा संस्कृत विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष प्रो. राधिका प्रसाद मिश्र जी ने कहा कि कविराज राजशेखर की कृतियां संस्कृत साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं तथा अपने भीतर ज्ञान के विभिन्न आयामों को समेटे हुए हैं। विशिष्ट व्याख्यान हेतु विशिष्ट वक्ता प्रो राजेश्वर मिश्र जी ने

राजशेखर साहित्य में वैदिक संदर्भ विषय पर अपने वक्तव्य में भारत की महान प्राचीनतम वैदिक संस्कृति के वैशिष्ट्य से अवगत कराते हुए कविराज राजशेखर की साहित्यिक विशेषताओं में वैदिक संस्कृति विषय पर प्रकाश डालते हुए आचार्य राजशेखर को वैदिक संस्कृति का पुरोधा बताया। विशिष्ट व्याख्यान सत्र की अध्यक्षता कर रही तिलक महाविद्यालय कटनी की पूर्व प्राचार्या तथा परम विदुषी कत इला घोष जी ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि वैदिक संस्कृति संपूर्ण विश्व के मंगल की कामना करने वाली विश्ववरणीय प्रथम संस्कृति है। संपूर्ण संस्कृत साहित्य और शास्त्र की परंपरा में राजशेखर अद्वितीय है। उन्होंने शोध तथा शोध विधि के लिए अनेक महत्वपूर्ण सूत्र भी दिए जो सभी अनुशासनों के लिए मार्गदर्शक हैं। संचालन डॉ. जया शुक्ला एवं डॉ. सरिता यादव ने किया। इस मौके पर विवि संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग के अतिथि विद्वान डॉ. साधना जनसारी, डॉ. अखिलेश मिश्र, डॉ. सरिता यादव, डॉ. जया शुक्ला, पं. रामफल शर्मा, विनोद तिवारी आदि की उपस्थिति रही।

तृतीय सत्र का आयोजन –

शोध संगोष्ठी का तृतीय सत्र दोपहर बाद प्रारंभ हुआ। विवि के समिति कक्ष में आयोजित तृतीय सत्र की अध्यक्षता करते हुए संस्कृत विभाग के पूर्वाचार्य तथा अध्यक्ष प्रो. कमल नयन शुक्ल जी ने कहा कि राजशेखर अद्वितीय प्रतिभा के मौलिक कवि है जिनकी काव्य प्रतिभा से सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य आलोकित है। राजशेखा की रचनाओं में उनकी प्रौढ़ काव्य प्रतिभा का दर्शन होता है। शोध संगोष्ठी के तृतीय सत्र में मुख्यातिथि संपूर्णानंद विश्वविद्यालय वाराणसी के व्याकरण विभागाध्यक्ष प्रो दिव्य चेतन ब्रह्मचारी जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि संस्कृत भाषा का अध्ययन अवश्यरूपेण होना चाहिए, गुरुशिष्य परंपरा में संस्कृत भाषा का अध्ययन प्राचीन काल की महनीय परंपरा रही है। शास्त्र में जिसकी स्वभावतः रुचि होती है वही छात्र होता है, गुरु छात्र को छत्रवत शिष्य की रक्षा करता है तथा शिष्य का पालन करता है। गुरु शिष्य के आदर्श संबंधों को प्रदर्शित करती भारतीय संस्कृति के महत्त्व को निरूपित किया। इस सत्र में डॉ. ममता गुप्ता, डॉ. सरदार दिवाकर, डॉ. रामनारायण झारिया, डॉ. सुमनलता श्रीवास्तव, डॉ. शिवेश द्विवेदी, डॉ. गङ्गाधर त्रिपाठी, डॉ. बी.एल. आर्मो व डॉ. रीझन झारिया आदि विद्वतजनों ने अपने शोधपत्रों का वाचन किया।

घाटे की बजट की भरपायी के लिए विश्वविद्यालय बढ़ाए अपनी आय
विश्वविद्यालय में सभा (कोर्ट) एवं कार्यपरिषद की बैठकें सम्पन्न

जबलपुर 30 मार्च। रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय में बुधवार को सभा (कोर्ट) एवं कार्यपरिषद् की बैठकों में घाटे का बजट प्रस्तुत किया गया। जिसमें माननीय विधायक पाटन श्री अजय विश्नोई जी ने कहा कि विश्वविद्यालय इस घाटे की भरपायी के लिए नए पाठ्यक्रम शुरू करे एवं आवश्यकता के अनुसार 10 से 15 प्रतिशत की फीस वृद्धि की जाये। उन्होंने नई शिक्षा नीति के अनुसार पारम्परिक विश्वविद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर जोर देते हुए कहा कि हमें भविष्य में निजी विश्वविद्यालयों

की चुनौतियों का सामना करना है, ऐसे में युगानुकूल शिक्षा एवं तकनीक के प्रयोग पर पारम्परिक विश्वविद्यालय ध्यान केन्द्रित करे।

विवि सभा (कोर्ट) की बैठक में माननीय विधायक, नरसिंहपुर श्री जालम सिंह पटेल ने कहा कि रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के विकास के लिए सदैव बढ़चढकर सहयोग प्रदान करने का आश्वासन देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के विकास के लिए जो भी सहायता होगी उसके लिए सभी जनप्रतिनिधि सदैव तत्पर हैं। बैठक के आरंभ में माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने दोनों माननीय विधायकों का स्वागत किया और विवि में नवाचारों की जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान में नई शिक्षा नीति को दृष्टिगत रखते हुए कृषि संकाय को आरंभ किया गया है। भविष्य में इंजीनियरिंग एवं फाईन आर्ट संकाय भी प्रारंभ किये जायेंगे। वर्तमान में छात्रों की संख्या में वृद्धि हुई है और छात्रों का पारम्परिक विषयों में भी रूझान बढ़ा है। कुलसचिव प्रो. बृजेश सिंह ने अतिथियों का वाचिक स्वागत किया एवं वित्त नियंत्रक श्री रोहित सिंह कौशल ने विवि का वर्ष 2022–23 का बजट प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर कार्यपरिषद् सदस्य प्रो. राकेश बाजपेयी, प्रो. रामशंकर, प्रो. अमित गुप्ता, प्रो. धीरेन्द्र पाठक, क्षेत्रीय अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा डॉ. लीला भलावी, श्री डी.एस. महोबिया, सुश्री सीमा पटेल, संकायाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र सिंह, प्रो. एस.एस पाण्डेय, डॉ. नंदिता सरकार, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. विवेक मिश्रा, सहायक कुलसचिव मोनाली सुश्री सूर्यवंशी एवं लेखा तथा अकादमिक विभाग के सभी कर्मचारीगण मौजूद रहे।